Approved by UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF
IIJ Impact Factor : 2.471
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International refereed research Journal

Year-VIII **NO.VII** **Supplement 2018**

Editor in Chief
Anish Kumar Verma

Associate Editors
Rakesh Kumar Maurya
Purusottam Lal Vijay
Romee Maurya

Published by :
South Asia Research & Development Institute
B. 28/70, Manas Mandir, Durgakund, Varanasi-221005, U.P. (INDIA)
Website : www.researchdiscourse.org
E-mail : researchdiscourse2012@gmail.com
Mobile : 09453025847, 8840080928

Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Refereed Research Journal, Published by : SARDI, Varanasi, U.P. (INDIA)
Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF, IIJ Impact Factor : 2.471, Year VIII, No. VII, Supplement 2018, Page No. : 29-31

ऋग्वेद में नारी का स्वरूप

डॉ0 अनीता कुमारी*

*एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत राजकीय महिला पी0 जी0 कालेज, गाजीपुर, उ0प्र0

शः वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य है, साथ ही भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों का स्रोत भी है। वह जगत की निर्मात्री जीवन की सृजनात्मक शक्ति है, उमा, रमा ब्रह्माणी है, यह कथन प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में स्वीकार अवश्य करता है। थो भी राष्ट्र की प्रगति वहाँ की नारियों पर निर्भर करती है। नारी की वीरता, उदारता, विद्वता, स्नेह, त्याग, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति ः गुण वैदिक वाङ्मय में सरलता से यंत्र–तंत्र प्रतिबिम्बित होते है। इसलिये इनके अध्ययन के बिना ऋग्वैदिक कालीन नारी के िप को सम्यक रूपेण समझा नहीं जा सकता। इन वैदिक संहिताओं में नारी का स्वर्णिम काल दृष्टिगत होता है। उसे समाज तथा ार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। उसे समय नारी को चार रूपों में देखा जाता था–कन्या, पत्नी, माता तथा सामान्य। सामान्यतः गया है कि कन्या कमनीय होने के कारण सभी के स्नेह का पात्र होती थी। **'कन्या कमनीया भवति। क्वेयं नेतव्येतिश्वा'** (ऋ0 27/12)

शब्द : ऋग्वेद, सृजनात्मक शक्ति, वैदिक वाङ्मय, वैदिक धर्म, वैदिक कालीन आदि।

ऋग्वेद के प्रारम्भिक मन्त्रों में नारी के शक्ति, सामर्थ्य और अधिकारों का वर्णन है। उन्हें शिक्षा, विवाह, धर्म आदि क्षेत्रों में ों के समान अधिकार प्राप्त था। नारी का महत्व वर्णित करते हुए कहा गया है कि वह पुरूष की सहयोगी और सहायक है, ेद में पत्नी को घर कहा गया है –

'जायेदस्तम्'

विवाह के पश्चात् उसे पतिगृह में गृहपत्नी, गृहस्वामिनी का अधिकार प्राप्त होता था–

गृहान गच्छ गृहपत्नी ययासः।

एक ओर उसे पति, सास–ससुर की सेवा का दायित्व दिया जाता है तो दूसरी ओर गृहस्वामिनी के रूप में सास–ससुर, ः आदि की सामाज्ञी कहा गया है –

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवा भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधिदेवेषु।।

यज्ञ वैदिक धर्म का मेरूदण्ड है। नारी सहधर्मिणी होती है। पत्नी के बिना यज्ञ अपूर्ण होता है, इसलिए यज्ञ जैसे धार्मिक ः से पति के साथ समान रूप से सहभागिता करती है। ऋग्वेद में स्त्रियों के यज्ञोपवीत संस्कार तथा यज्ञ आदि के सम्पादन का लेख किया गया है। ऋग्वेद में नारी का गौरव बताते हुए उसे ब्रह्म ऋत्विक कहा गया है।

स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ।

अर्थात स्त्री ब्रह्मा के समान मानव के जन्मदात्री और जीवन निर्मात्री है। इसका अभिप्राय यह है कि वह ज्ञान में उत्कृष्ट होती । वेदों में इन्द्राणी को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उसका कथन है कि मै समाज में मूर्धन्य हूँ, अग्रगण्य हूँ और वर वक्ता हूँ–

अहं केतुरहं मूर्धाऽहमुग्रा विवाचनी।

इन्द्राणी का ही कथन है कि मुझे कोई अबला न समझे। उसे ऋग्वेद में सुमति (विदुषी) वल्गु (सुन्दरी), शिव (कल्याणी), ात्मन्वती (स्वाभिमानी), अघोरचक्षु (किसी को कुदृष्टि से न देखने वाली), स्योना (सुखदा) वीरसूः (वीरप्रसवा) तथा देवकामा आस्तिकमानसा) कहा गया है।

वैदिक वाङ्मय के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि वैदिक काल में शिक्षा पर सबका समान अधिकार था। अध्ययन काल में उसे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना पड़ता था। ऋग्वैदिक काल में अनेक ऐसी नारियों का उल्लेख मिलता है, जिनके द्वारा वेद की अनेक ऋचाओं का प्रणयन किया गया था। ऋग्वेद में ऋषिकाओं द्वारा दृष्ट मन्त्रों की संख्या 276 है। इन स्त्री ऋषियों को ऋषिका, मन्त्रद्रष्टी तथा ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। वैदिक कालीन ज्ञान विज्ञान के विकास में, सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षण में और जीवन में नैतिक मूल्यो के स्थापना में ऋषिकाओं का महनीय स्थान है। लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, गार्गी, अदिति, शची, यमी, उर्वशी, विश्ववारा, सूर्या, सावित्री आदि ऐसी ही विदुषी नारियॉ थी जो शिक्षा, ज्ञान, विद्वता और प्रतिष्ठा में वैदिक ऋषियों के समान थी। ऋग्वेद में 24 मन्त्रद्रष्टा ऋषिकाओं का उल्लेख है।

	ऋषिका	मन्त्रसख्या	सन्दर्भ
1.	सूर्य सावित्री	47	10.85
2.	सिकता निवावरी	10	9.86
3.	यमी वैवस्वती	11	10.10, 10.154
4.	अदिति	10	10.72, 4.18
5.	अपाला आत्रेयी	7	8.91

6.	अगस्त्य स्वसा	6	10.60
7.	उर्वशी	6	10.95
8.	शिखण्डिन्यौ अप्सरसौ	6	9.104
9.	देवजामय	5	10.153
10.	नदी	4	3.33
11.	गोधा	1	10.134
12.	वसुकपत्नी	1	10.28
13.	घोषणा काक्षीवती	28	10.39, 10.40
14.	इन्द्राणी	17	10.86, 10.145
15.	दक्षिण प्राजापत्या	11	10.107
16.	वाक् आम्भृणी	8	10.125
17.	जुहू ब्रह्मजाया	7	10.109
18.	विश्ववारा आत्रेयी	6	5.28
19.	सरमा देवशुनी	6	10.108
20.	पौलोमी शची	6	10.159
21.	श्रद्धा कामायनी	5	10.151
22.	सार्पराज्ञी	3	10.189
23.	शश्वती आंगिरसी	1	8.1
24.	रोमशा ब्रह्मवादिनी	1	1.126

देवी अदिति का देवोत्पत्ति सम्बन्धी सूक्त को वैज्ञानिक चिन्तन को परिलक्षित करता है। देवी वागम्भृणी का वाक् आध्यात्मिक तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से उच्चकोट का है। नदी सूक्त व रात्रि सूक्त प्रकृति प्रेम का परिचायक है। श्रद्धा माध्यम से नैतिक मूल्यो की महत्ता बताई गयी है। ये सर्वशक्तिमयी देवियों सर्वकल्याणकारी मानी गयी है। इन देवियों की स्पष्ट है कि ऋग्वेद काल मे आर्यजन नारियों का सम्मान करते थे व नारी शक्ति में विश्वास करते थे, जो वाक्देवी सरस्वती, देवी लक्ष्मी, शक्ति की देवी दुर्गा का उदात्त स्वरूप देवी स्तुति के रूप में मिलता है। मन्त्रों की संख्या कम होने पर भी इसमे भाव तत्कालीन नारी की स्थिति व मनोदशा का परिचायक है।

राजा जनक ने यज्ञ के अवसर पर जिस धार्मिक शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया था, उसमे विदुषी गार्गी ने अपनी प्रतिभा, विलक्षण, तर्कशक्ति और सूक्ष्म विचार तन्तुओं द्वारा दुरूह प्रश्न करके ऋषि याज्ञवल्क्य के दॉत खट्टे कर दिये थे। इन से यह पता चलता है कि उस युग में स्त्रियॉ स्वातन्त्रतापूर्वक पुरूषों के साथ विद्वत गोष्ठियों और दार्शनिक वाद–विवादों प्रतिभाग करती थी। इससे स्पष्ट होता है कि ऋग्वैदिक काल में नारियॉ न्यायशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र में भी कुशल होती थी। क को सुयोग्य वधू के रूप में परिणत करने के लिए उदार शिक्षण का प्रबन्ध था। उन्हें गृहकार्यो के अतिरिक्त ललित कलाओं, कला, संगीत, नृत्य तथा अभिनय की उत्तम शिक्षा प्रदान की जाती थी।

वेदों में नारी के वैवाहिक जीवन का सर्वथा सम्मान किया गया है। ऋग्वेद के विवाह सूक्तों में विवाह से सम्बद्ध अनेक का वर्णन है। ऋग्वेद में बाल विवाह निषिद्ध है। कन्या के पूर्ण यौवन प्राप्त करने पर ही विवाह होता था।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।

विवाह माता–पिता की अनुमति से होता था। सगोत्र विवाह निषिद्ध था। वैवाहिक कृत्यों में मधुपर्क, पाणिग्रहण, अग्निपरि शिलारोहण, लाजाहोम, सप्तपदी, ध्रुवदर्शन, आदि मुख्य थे। वैदिक विवाह अविच्छेद्य था। राजपरिवार आदि में बहुविवाह का प्रचलन।

पतिं न नित्यं जनयः सनीडाः। (ऋग्वेद 1/71/1)

जनीरिव पतिरेकः समानः। आदि अनेक मन्त्रों में एक पति की अनेक पत्नियों का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मणों में भी बहुवि की प्रथा विद्यमान थी। च्यवन ऋषि की बहुपत्नियों का एवं सौभरि ऋषि का पचास कन्याओं से विवाह का उल्लेख मिलता साधारणतया बहुपत्नीक मनुष्य का जीवन अशान्तिमय समझा जाता था। ऋग्वेद में पर्दा प्रथा तथा सतीप्रथा का वर्णन नही मिलता पति की सम्पत्ति पर पत्नी का अधिकार होता था। ऋग्वेद में पति की सम्पत्ति में पत्नी के अधिकार का वर्णन मिलता है–

परिवृक्तेव पति विद्यामानट्

वेद पुत्र–पुत्री दोनो के समान अधिकार का प्रतिपादन करता है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में बड़े आलकारिक दंग से दोनो समान अधिकार को सिद्ध किया है। विवाह के समय पति प्रतिज्ञा करता है– हे पत्नी ! मै तुमसे छिपाकर कुछ नही खाऊँगा। तु अधिकारों का हनन नही करूंगा। अपनी सहमति का इस प्रकार प्रयोग करूँगा। जिससे तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो।

यद्यज्जाया पचति त्वत्परः परः पतिर्वा जाये त्वत् तिरः।
सं तत्तृजेथां सह वा तदस्तु सम्पादयन्तौ सह लोकमेकम्।।

वैदिक काल में स्त्री को सबला कहा जाता था। ऋग्वेद में स्त्री सेना का भी उल्लेख किया गया है यथा– **स्त्रियों ही आयुधानि चक्रे।** साथ उन्हे निडर, साहसी और अग्रणी बताया गया है। **अग्र एति युवतिरह्रयाणा।**

उनके लिए सैन्य शिक्षा का वर्णन यंत्र–तंत्र मिलता था। क्षत्रिय कन्याएं धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण करती थी। आवश्यक पड़ने पर पति के साथ युद्धो में भी प्रतिभाग करती थी। अपितु सेनापति का भी कार्य करती थी। वे अपनी संतान को भी शूर

एवं सुसस्कारी बनाती थी। इसकी पुष्टि विदुषि घोषा द्वारा ऋग्वेद के सूक्त से होता है। जिसमे वधिमती तथा विश्पला नामक योद्धाओं का वर्णन है। राजा खेल की रानी विपश्ला का पैर युद्ध मे कट गया था। अश्विनी कुमारो की कृपा से उसे लोहे के त है और युद्ध मे विजय प्राप्त की। गाय चुराकर भाग रहे चोरो का मुद्गलानी (मुद्गल की पत्नी) ने पीछा किया धनुष बाण चोरों से युद्ध कर के अपनी गाय वापस ली तथा अपने पति की सहायता की–

स्थीरभूद् मुद्गलानी गाविष्टौ, अजयत्, सहस्रम्। (ऋ0 10/105)

इस वर्णन से ज्ञात होता ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों सेना मे भी भर्ती होती थी। ऋग्वेद के सरमा पणि संवाद में सरमा (स्त्री न्द अर्थात राजदूती के रूप में भेजते है इस सूक्त में सरमा और पणियों का रोचक संवाद है। इसमें दूत के कर्त्तव्यों और दुता का सुन्दर वर्णन मिलता है।

ऋग्वेद में ब्रह्मवादिनी रोमशा, जिसने नारी को शक्ति के रूप में प्रतितिष्ठत करते हुए अन्याय तथा अत्याचार के विरूद्ध उठाई **उपोप में परामश मा दभ्राणि मन्यथा। अहमस्मि रोमशा गन्धारीणामिवाविका।।**

वेदो में नारी का पत्नी के पश्चात् त्याग, तप और प्रेम की त्रिपथगा के रूप में माता का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद के प्रथम न के एक सूक्त में प्रयुक्त 'मातापितरा' समस्त पद के द्वारा यह स्पष्ट है कि वैदिक समाज में सृष्टि की जन्मदात्री माता के रूप ष्ठ स्थान प्राप्त था।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वती।।
अप्रशता इव प्रशस्तिमाम्ब नस्कृधि।।

पत्नी रूप का चरम सौन्दर्य उसके मातृत्व में होता है। यह नारी जीवन की वह अवस्था है जहाँ उसकी मातृशक्ति और ा प्रस्फुटित होती है तथा स्वभावतः उसका कोमल स्वरूप प्रत्यक्ष होता है वैदिक वाङ्मय में इसे 'मातृ' शब्द से अभिहित किया क्योंकि यहीं एकलौता 'मातरा' शब्द 'माता–पिता दोना का बोध कराता है। ऋग्वेद मे उषा वर्णन के अवसर पर कहा गया है कि जिस प्रकार माता के देदीप्यमान मुख को देखकर आकर्षित होता है, उसी प्रकार हम भी तुम्हारी ओर आकर्षित होते है –

तस्यास्ते रत्नभाजं ईमहे वयं स्याम मातुर्नसुनवः ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ऋग्वैदिक युग में पितृसत्तात्मक सामाजिक संगठन होने पर भी समाज में नारियों की न प्रतिष्ठा थी। ऋग्वेद में ऐसा कोई प्रमाण अभी तक उपलब्ध नही हुआ है, जो यह प्रकट करें कि समाज में स्त्रियों की स्थिति ों की अपेक्षा हेय थी। बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में स्त्रियों को वही प्रतिष्ठा प्राप्त थी, जो पुरूषों को। पर्दाप्रथा से नारी को समारोहो में प्रतिभाग करने भ्रमण करने तथा विवाह करने की पूर्ण स्वातन्त्रता के साथ विवाह माता–पिता के आज्ञा से ा था धार्मिक, राजनीतिक और शैक्षणिक दृष्टि से नारी विदुषी के साथ–साथ गृहकलाओं में निपुण थी। धार्मिक कृत्यों, सामाजिक सवों, समारोहों में पुरूषों के साथ समान आसन ग्रहण करती थी। वह कहीं पर दुहिता के रूप में, कहीं गृहिणी के रूप में, तो कही ा के रूप में पूजनीय थी। नारी को सदा जागरूक रहने की शिक्षा दी जाती थी। नारी अपने अधिकारों के साथ–साथ अपने स्वी व्यक्तित्व से परिवार, समाज, राष्ट्र के निर्माण का दायित्व भी निभाती थी।

वास्तव में ऋग्वैदिक कालीन नारियों ने यह आदर्श प्रस्तुत किया कि स्व महिमा से नारियों को अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार बना चाहिए कि वे समाज में सम्मानित हो सके। स्वस्थ व सार्थक समाज के निर्माण के आज के स्त्री और पुरूषों को सहयोगी एवं पूरक बनना है, जैसा कि ऋग्वैदिक कालीन समाज में था। इस प्रकार ऋग्वैदिक युग नारी के लिए स्वर्णिम युग था, उसे आधुनिक ाज में यथास्थिति बनाये रखना मानव का परम कर्तव्य है। इसके लिये हमे अपनी अतीत की धरोहर वेदों का अध्ययन कर वैदिक ियों के दिव्य सन्देशों को हृदयंगम करना होगा, तभी **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' की उक्ति चरितार्थ होगी।**

न्दर्भ :

1. ऋग्वेद– 3/53/4
2. ऋग्वेद– 10/85/25
3. ऋग्वेद– 10/85/46
4. ऋग्वेद– 8/33/19
5. डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी : वैदिक साहित्य एवं सस्कृति पृ0सं0 48
6. ऋग्वेद– 10/27/12
7. ऋग्वेद – 1/71/1
8. ऋग्वेद– 10/102/11
9. ऋग्वेद– 2/17/7
10. ऋग्वेद– 5/30/9
11. ऋग्वेद– 7/80/2
12. ऋग्वेद– 1/126/7
13. ऋग्वेद– 8/91/1
14. ऋग्वेद– 2/41/13